Uncha Uncha Shatrunjayna Shikharo Sohay Lyrics| Jain Stavan



ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयनां शिखरो सोहाय,
वच्चे मारा दादा केरा केरा जगमग थाय... - ऊंचा.

• दादा तारी यात्रा करवा, मारुं मन ललचाय (२),
तळेटीए शीश नमावी, चढवा लागुं पाय (२), - ऊंचा.

पावनगिरिनो, स्पर्श थातां, पापो दूर पलाय..
लीली लीली झाडीओमां, पंखी करे कलशोर (२), - ऊंचा.

सोपान चढताने, हैयुं जाणे, अषाढियानो मोर (२)
कांकरे कांकरे सिद्धा अनंता, लळी लळी लागुं पाय... - ऊंचा.

पहेली आवे रामपोळने, त्रीजी वाघणपोळ (२),
शांतिनाथनां दर्शन करीए, पहोंच्या हाथीपोळ (२), - ऊंचा.

सामे मारा, दादा केरा, दरबार देखाय...
दोडी दोडी आवुं दादा दर्शन करवाने काज (२), - ऊंचा.

भाव भरीने भक्ति करुं, साधु आतम काज (२),
माता मरू (देवी) नां, नंदन भेटी, जीवन पावन थाय... - ऊंचा.

क्षमाभावे ॐकार पदनुं, जपीश हुं तो जाप (२),
दादा तारा गुणला गातां, कापीश भवनां पाप (२),
पद्मविजय'नां, हैये आजे, आनंद उभराय... - ऊंचा.

ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय – हिंदी और English में संपूर्ण भावार्थ

यह एक अत्यंत भावपूर्ण जैन भक्ति गीत है, जिसमें श्री शत्रुंजय तीर्थ (पालिताणा), आदिनाथ भगवान (दादा), तीर्थयात्रा, आत्मशुद्धि, क्षमा, भक्ति और मोक्षमार्ग की सुंदर महिमा का वर्णन किया गया है।

इस भजन में भक्त अपने हृदय की उस गहरी इच्छा को व्यक्त करता है, जिसमें वह शत्रुंजय पर्वत की पवित्र यात्रा करके भगवान आदिनाथ के दर्शन करना चाहता है। पर्वत की ऊंची चोटियां, हरी-भरी प्रकृति, मंदिरों की दिव्यता, तीर्थ के पवित्र रास्ते और भगवान के दर्शन का आनंद भक्त के मन को भावविभोर कर देते हैं।

नीचे प्रत्येक अंतरे का हिंदी और अंग्रेजी में विस्तृत भावार्थ दिया गया है।

भाग 1: हिंदी में संपूर्ण भावार्थ

1. ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय

भावार्थ:

शत्रुंजय पर्वत की ऊंची-ऊंची चोटियां अत्यंत सुंदर और मनमोहक दिखाई देती हैं। उन चोटियों के बीच स्थित भगवान के पवित्र जिनालय अपनी दिव्यता से पूरे वातावरण को जगमगा रहे हैं।

यह दृश्य केवल प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन नहीं है, बल्कि आत्मा की आध्यात्मिक ऊंचाई का भी प्रतीक है।

जिस प्रकार शत्रुंजय पर्वत की चोटियां आकाश की ओर उठती हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने जीवन को ऊंचा उठाने का प्रयास करना चाहिए।

यहां जगमगाते मंदिर हमें भगवान की वीतरागता, तपस्या, त्याग और आत्मकल्याण के मार्ग की याद दिलाते हैं।

भक्त को लगता है कि पर्वत का प्रत्येक मंदिर आध्यात्मिक प्रकाश फैला रहा है और प्रत्येक शिखर उसे प्रभु के करीब जाने के लिए बुला रहा है।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

जीवन की असली ऊंचाई धन, पद या प्रतिष्ठा में नहीं, बल्कि आत्मा की पवित्रता, संयम और सद्गुणों में होती है।

2. दादा तारी यात्रा करवा, मारुं मन ललचाय

भावार्थ:

हे मेरे प्रिय दादा आदिनाथ भगवान ! आपके पवित्र तीर्थ की यात्रा करने के लिए मेरा मन अत्यंत उत्सुक है।

मेरे हृदय में बार-बार यही इच्छा जागती है कि मैं आपके दर्शन करने के लिए शत्रुंजय पर्वत पर आऊं।

जब मैं तीर्थयात्रा के लिए तलहटी में पहुंचता हूं, तो सबसे पहले अपना सिर झुकाकर भगवान के चरणों में श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं।

इसके बाद मैं पर्वत पर चढ़ने के लिए अपने कदम आगे बढ़ाता हूं।

यहां तलहटी में सिर झुकाने का अर्थ केवल शारीरिक प्रणाम करना नहीं है। इसका गहरा आध्यात्मिक अर्थ है अपने अहंकार, अभिमान, क्रोध और सांसारिक इच्छाओं को प्रभु के सामने समर्पित करना।

पर्वत पर चढ़ने की शुरुआत आत्मिक यात्रा की शुरुआत के समान है।

भक्त का प्रत्येक कदम उसे भगवान के दर्शन के साथ-साथ स्वयं की आत्मा को पहचानने की दिशा में भी आगे बढ़ाता है।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

सच्ची तीर्थयात्रा केवल पैरों से नहीं होती, बल्कि विनम्रता, श्रद्धा और शुद्ध भावों से होती है।

3. पावनगिरिनो स्पर्श थातां, पापो दूर पलाय

भावार्थ:

जब भक्त इस पवित्र पर्वत का स्पर्श करता है, तो उसके मन में ऐसा भाव उत्पन्न होता है कि उसके सभी पाप और बुरे संस्कार उससे दूर भाग रहे हैं।

यहां पवित्र पर्वत का स्पर्श केवल शारीरिक स्पर्श नहीं है। यह उस श्रद्धा और पवित्र भावना का प्रतीक है, जिसके साथ भक्त तीर्थभूमि में प्रवेश करता है।

जैन दर्शन के अनुसार आत्मा कर्मों के बंधन से बंधी हुई है। राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे कषाय आत्मा को अशुद्ध करते हैं।

तीर्थयात्रा के दौरान जब व्यक्ति अपने भीतर विनम्रता, क्षमा, त्याग और संयम के भाव विकसित करता है, तब वह कर्मबंधन से मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ता है।

इस अंतरे में प्रकृति का भी सुंदर वर्णन है।

पर्वत पर चारों ओर हरी-भरी झाड़ियां हैं। वृक्षों के बीच पक्षियों का मधुर कलरव सुनाई देता है। ऐसा लगता है मानो पूरी प्रकृति भी भगवान की भक्ति में मग्न होकर मंगलगान कर रही हो।

यह प्राकृतिक सुंदरता भक्त के मन को शांति और आनंद से भर देती है।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

पवित्र स्थानों की यात्रा तभी सार्थक होती है, जब उनके प्रभाव से हमारे विचार, व्यवहार और जीवन भी पवित्र बनें।

4. सोपान चढ़ताने, हैयुं जाणे, अषाढियानो मोर

भावार्थ:

जब भक्त शत्रुंजय पर्वत की सीढ़ियां चढ़ता है, तो उसके हृदय में एक अद्भुत आनंद उत्पन्न होता है।

उसका मन मानो आषाढ़ महीने में नृत्य करने वाले मोर की तरह खुशी से झूम उठता है।

आषाढ़ का महीना वर्षा ऋतु के आगमन का संकेत देता है। बादलों को देखकर मोर जिस प्रकार अपने पंख फैलाकर नृत्य करता है, उसी प्रकार प्रभु के दर्शन की आशा में भक्त का हृदय आनंदित हो जाता है।

हर सीढ़ी चढ़ते समय भक्त को ऐसा अनुभव होता है मानो वह भगवान के और निकट पहुंच रहा हो।

आगे गीत में कहा गया है कि पर्वत के प्रत्येक कंकड़-पत्थर पर अनंत सिद्ध आत्माओं के चरण पड़े हैं।

यहां एक गहरा जैन आध्यात्मिक भाव छिपा हुआ है।

सिद्ध भगवान वे आत्माएं हैं जिन्होंने समस्त घाति और अघाति कर्मों का क्षय करके मोक्ष प्राप्त कर लिया है। वे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर सिद्धशिला में विराजमान हैं।

शत्रुंजय तीर्थ को असंख्य सिद्धों और महान आत्माओं की साधना एवं मोक्षकल्याण से पवित्र माना जाता है।

इसलिए भक्त पर्वत के प्रत्येक पत्थर को श्रद्धापूर्वक नमन करता है।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

जीवन में हर कदम ऐसा होना चाहिए, जो हमें आत्मकल्याण, सदाचार और मोक्षमार्ग की ओर ले जाए।

5. पहेली आवे रामपोळने, त्रीजी वाघणपोळ

भावार्थ:

इस अंतरे में शत्रुंजय पर्वत की यात्रा के दौरान आने वाले विभिन्न प्रवेशद्वारों और पवित्र स्थानों का वर्णन किया गया है।

भक्त अपनी यात्रा में सबसे पहले रामपोल पहुंचता है। आगे चलकर वह वाघणपोल से गुजरता है और फिर हाथीपोल पहुंचता है।

इन स्थानों का उल्लेख तीर्थयात्रा के वास्तविक मार्ग को भक्तिमय रूप में प्रस्तुत करता है।

इसके बाद भक्त भगवान शांतिनाथ के दर्शन करता है।

भगवान शांतिनाथ वर्तमान अवसर्पिणी काल के सोलहवें तीर्थंकर हैं। उनके दर्शन से भक्त के हृदय में शांति, श्रद्धा और आत्मिक प्रसन्नता का भाव जागृत होता है।

इन पवित्र द्वारों से गुजरना मानो जीवन की आध्यात्मिक यात्रा के अलग-अलग पड़ावों को पार करना है।

हर पड़ाव भक्त को यह याद दिलाता है कि मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ने के लिए धैर्य, अनुशासन और निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

जीवन में अनेक पड़ाव आते हैं, लेकिन श्रद्धा और सही दिशा बनाए रखने वाला व्यक्ति अपने आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।

6. सामे मारा दादा केरा दरबार देखाय

भावार्थ:

जैसे-जैसे भक्त पर्वत पर आगे बढ़ता है, उसे सामने भगवान आदिनाथ का दिव्य दरबार दिखाई देने लगता है।

यह दृश्य उसके लिए अत्यंत आनंददायक और भावुक कर देने वाला होता है।

वह अपने मन में सोचता है कि अब वह क्षण निकट आ गया है, जब उसे अपने आराध्य भगवान के दर्शन प्राप्त होंगे।

उसके कदम तेजी से आगे बढ़ने लगते हैं। वह दौड़ते हुए प्रभु के दर्शन करने के लिए पहुंचना चाहता है।

यहां दौड़ने का अर्थ शारीरिक गति से अधिक हृदय की आतुरता है।

जिस प्रकार लंबे समय से बिछड़ा हुआ व्यक्ति अपने प्रियजन से मिलने के लिए व्याकुल होता है, उसी प्रकार भक्त भी भगवान के दर्शन के लिए व्याकुल हो उठता है।

भगवान का दिव्य दरबार उसे संसार की क्षणभंगुरता से ऊपर उठकर आत्मिक शांति की अनुभूति कराता है।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

प्रभु के प्रति सच्ची भक्ति में दिखावा नहीं, बल्कि हृदय की गहरी श्रद्धा और दर्शन की निष्कपट लालसा होती है।

7. भाव भरीने भक्ति करुं, साधु आतम काज

भावार्थ:

भक्त भगवान के सामने पहुंचकर अत्यंत भावपूर्ण तरीके से भक्ति करता है।

उसका उद्देश्य केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना नहीं है, बल्कि अपनी आत्मा का कल्याण करना है।

इस अंतरे में साधु और आत्मकल्याण की भावना को विशेष महत्व दिया गया है।

जैन धर्म में साधु-साध्वी का जीवन त्याग, तपस्या, अहिंसा, संयम और आत्मसाधना का आदर्श माना जाता है।

भक्त उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने अंदर भी अच्छे संस्कार विकसित करना चाहता है।

इसके बाद वह माता मरुदेवी के दर्शन का उल्लेख करता है।

माता मरुदेवी भगवान ऋषभदेव अर्थात आदिनाथ भगवान की माता थीं। जैन परंपरा में उन्हें विशेष श्रद्धा से याद किया जाता है।

उनका नाम सुनते ही मातृत्व, पवित्रता, श्रद्धा और आध्यात्मिक कल्याण की भावना जागृत होती है।

भक्त माता मरुदेवी के दर्शन करके स्वयं को धन्य अनुभव करता है।

उसका मानना है कि इस पवित्र तीर्थ की यात्रा और दर्शन से उसका जीवन सार्थक तथा पावन बन रहा है।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

भक्ति का सर्वोच्च उद्देश्य आत्मा का कल्याण है। हमें संतों के आदर्शों और महान आत्माओं के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

8. क्षमाभावे ॐकार पदनुं, जपीश हुं तो जाप

भावार्थ:

अंतिम अंतरे में भक्त अपनी भक्ति को एक बहुत ही गहरे आध्यात्मिक स्तर पर ले जाता है।

वह कहता है कि मैं क्षमा और विनम्रता के भाव के साथ ॐकार पद का जाप करूंगा।

जैन धर्म में क्षमा का बहुत बड़ा महत्व है। क्षमा का अर्थ है दूसरों के प्रति द्वेष, क्रोध और बदले की भावना को छोड़ देना।

जब मनुष्य किसी के प्रति मन में दुर्भावना रखता है, तो सबसे पहले उसकी अपनी आत्मा अशांत होती है।

लेकिन जब वह क्षमा करना सीखता है, तो उसका मन हल्का और शांत हो जाता है।

ॐकार का जाप भक्त के लिए आध्यात्मिक स्मरण और आत्मचिंतन का माध्यम बनता है।

इसके बाद भक्त कहता है कि हे दादा! आपके गुणों का गान करते हुए मैं अपने जीवन के पापों और कर्मबंधन को समाप्त करने का प्रयास करूंगा।

जैन दर्शन के अनुसार केवल किसी मंत्र का उच्चारण कर लेने से कर्म अपने आप नष्ट नहीं होते। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, तपस्या और कषायों का त्याग आत्मशुद्धि के मार्ग हैं।

प्रभु के गुणों का स्मरण व्यक्ति को इन्हीं सद्गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

अंत में कवि पद्मविजय अपने हृदय में उमड़ते हुए आनंद को व्यक्त करते हैं।

भगवान के गुणों का स्मरण करते हुए उनका हृदय आनंद, श्रद्धा और भक्ति से भर जाता है।

इस अंतरे का आध्यात्मिक संदेश :

क्षमा, विनम्रता, प्रभु के गुणों का स्मरण और आत्मशुद्धि ही सच्ची भक्ति के आधार हैं।

भाग 2: Complete Meaning in English

1. The magnificent peaks of Shatrunjaya

The opening verse beautifully describes the magnificent and towering peaks of Shatrunjaya Hill.

The hill is adorned with numerous sacred Jain temples, whose beautiful architecture creates a divine and spiritually uplifting atmosphere.

The shining temple spires symbolize the eternal light of spiritual wisdom, purity, and liberation.

The devotee is deeply fascinated by this divine landscape. To him, Shatrunjaya is not merely a mountain but a sacred destination where countless souls have pursued spiritual enlightenment.

The rising peaks also carry a symbolic meaning. Just as the mountain reaches towards the sky, human beings should strive to elevate their souls through good conduct, self-discipline, compassion, and spiritual awareness.

Spiritual message: True greatness is not measured by worldly wealth or status. It is measured by the purity and spiritual progress of the soul.

2. My heart longs to undertake your pilgrimage

The devotee addresses Lord Adinath with deep affection and devotion.

He expresses his intense desire to visit the sacred Shatrunjaya pilgrimage site and receive the blessings of the Lord.

As he reaches the foothills, he respectfully bows his head before beginning the ascent.

This act of bowing represents humility and surrender of ego.

In Jain philosophy, the spiritual journey begins when a person starts overcoming pride, anger, greed, attachment, and other negative emotions.

The devotee then begins climbing the sacred mountain with faith and enthusiasm.

Each step represents an effort to move closer to spiritual understanding and self-realization.

Spiritual message: A meaningful pilgrimage begins not with physical movement but with humility, faith, and purity of intention.

3. The sacred mountain and its divine natural beauty

The devotee feels that touching the sacred mountain brings an extraordinary sense of purity and peace.

He imagines that his sins and negative tendencies are moving away from him as he enters this holy environment.

This is a devotional expression of spiritual purification.

According to Jain philosophy, the soul is burdened by karmic bondage. Anger, ego, deceit, greed, and attachment contribute to this bondage.

Through right faith, right knowledge, right conduct, and spiritual discipline, the soul gradually progresses towards liberation.

The verse also celebrates the natural beauty of Shatrunjaya.

The green trees, peaceful surroundings, and melodious sounds of birds create an atmosphere of divine happiness.

It seems as though nature itself is participating in the worship of the Lord.

Spiritual message: The true blessing of a sacred pilgrimage is the positive transformation it creates within our thoughts, actions, and character.

4. Every step brings the devotee closer to spiritual joy

As the devotee climbs the steps of Shatrunjaya, his heart fills with extraordinary happiness.

His excitement resembles a peacock dancing joyfully during the monsoon season.

The peacock is traditionally associated with happiness, beauty, and celebration when the rainy season arrives.

Similarly, the devotee's heart dances with joy at the thought of reaching the divine temples.

The verse further describes every stone of the sacred mountain as blessed by countless liberated souls.

In Jain philosophy, Siddhas are liberated souls who have completely destroyed their karmic bondage and attained moksha.

They are free from the cycle of birth and death.

Shatrunjaya is revered as a sacred land associated with countless spiritual attainments and liberation.

Therefore, the devotee bows respectfully to every stone along the pilgrimage path.

Spiritual message: Every step in life should take us closer to truth, self-discipline, and liberation.

5. The sacred gateways and the darshan of Lord Shantinath

The verse describes the different gateways encountered during the pilgrimage.

The devotee passes through Ram Pol, Vaghan Pol, and eventually reaches Hathi Pol.

These sacred landmarks represent the journey towards the divine temples situated on Shatrunjaya Hill.

During the journey, the devotee also receives the opportunity to worship Lord Shantinath, the sixteenth Tirthankara of the present Jain time cycle.

His darshan fills the devotee's heart with peace, devotion, and spiritual satisfaction.

The description makes the pilgrimage feel like a beautiful spiritual journey, where every gateway represents another step towards inner awakening.

Spiritual message: Spiritual progress requires patience, discipline, determination, and continuous devotion.

6. The divine court of Lord Adinath appears before me

As the devotee approaches the sacred temples, he finally sees the magnificent divine presence of Lord Adinath's temple.

His excitement becomes overwhelming.

He can hardly contain his happiness because the moment he has been waiting for is finally approaching.

His heart urges him to move faster and reach the Lord for darshan.

This longing resembles the happiness of someone meeting a beloved person after a long separation.

However, the devotee's love is spiritual rather than worldly.

He seeks peace, inspiration, and a deeper connection with the qualities of the enlightened Lord.

The sight of the magnificent temple fills his heart with gratitude and devotion.

Spiritual message: Genuine devotion comes from the heart. It does not require external display or material rewards.

7. Worshipping with devotion for the welfare of the soul

The devotee now stands before the Lord and offers heartfelt prayers.

His purpose is not merely to fulfil worldly wishes but to achieve the spiritual welfare of his soul.

He remembers the ideals of Jain monks, whose lives represent renunciation, non-violence, discipline, meditation, and spiritual dedication.

Their example inspires him to live a more meaningful and compassionate life.

The verse also refers to Mata Marudevi, the mother of Lord Rishabhdev, also known as Lord Adinath.

She occupies an important place in Jain religious tradition.

Remembering her brings feelings of reverence, motherhood, purity, and spiritual inspiration.

The devotee feels blessed to receive darshan at this sacred pilgrimage site.

Spiritual message: The highest purpose of devotion is the welfare of the soul, not the fulfilment of temporary worldly desires.

8. Chanting Omkar with forgiveness and celebrating the virtues of the Lord

The final verse expresses the deepest spiritual message of the entire hymn.

The devotee promises to chant the sacred Omkar with forgiveness, humility, and devotion.

Forgiveness is one of the most important principles of Jainism.

It means releasing anger, hatred, resentment, and the desire to take revenge.

When a person genuinely forgives others, the mind becomes peaceful and the soul progresses towards purity.

The devotee also promises to sing the virtues of Lord Adinath.

Remembering the qualities of the Tirthankaras inspires people to practise non-violence, truthfulness, self-control, compassion, and detachment.

In Jain philosophy, merely chanting a mantra does not automatically destroy karmas. True spiritual purification requires right faith, right knowledge, right conduct, penance, and freedom from passions.

The poet Padmavijay concludes by expressing the immense happiness arising in his heart through devotion.

His heart overflows with spiritual joy as he remembers and celebrates the virtues of the Lord.

Spiritual message: Forgiveness, humility, devotion, and self-purification are the foundations of a meaningful spiritual life.

भाग 3: इस पूरे भजन का गहरा आध्यात्मिक सार

इस पूरे भजन में केवल शत्रुंजय पर्वत की यात्रा का वर्णन नहीं है, बल्कि मनुष्य की बाहरी और आंतरिक दोनों यात्राओं को दर्शाया गया है।

इस भजन को पांच प्रमुख आध्यात्मिक भावों में समझा जा सकता है।

1. श्रद्धा (Faith)

भक्त का भगवान आदिनाथ के प्रति अटूट विश्वास है। वह उनके दर्शन के लिए व्याकुल है। यह विश्वास उसे तीर्थयात्रा करने की प्रेरणा देता है।

2. विनम्रता (Humility)

तलहटी में सिर झुकाना अहंकार का त्याग करने का प्रतीक है। सच्ची भक्ति वहीं शुरू होती है, जहां अहंकार समाप्त होने लगता है।

3. आत्मशुद्धि (Purification of the Soul)

पवित्र पर्वत पर चढ़ते हुए भक्त अपने अंदर के क्रोध, मान, माया, लोभ और मोह को दूर करने की भावना रखता है।

4. क्षमा (Forgiveness)

अंतिम अंतरे में क्षमाभाव को विशेष महत्व दिया गया है। क्षमा मनुष्य को द्वेष से मुक्त करके आत्मिक शांति प्रदान करती है।

5. मोक्षमार्ग (Path to Liberation)

शत्रुंजय की यात्रा हमें याद दिलाती है कि जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आत्मा को कर्मबंधन से मुक्त करके मोक्ष प्राप्त करना है।

The deeper spiritual essence of the hymn

The entire hymn represents more than a physical pilgrimage to Shatrunjaya Hill.

It describes the journey of a devotee from worldly attachment towards spiritual awareness.

Its five central values are:

1. Faith: Developing unwavering devotion towards the enlightened Lord.
2. Humility: Surrendering ego and pride.
3. Purification: Overcoming anger, greed, attachment, and negative tendencies.
4. Forgiveness: Releasing resentment and developing compassion.
5. Liberation: Walking on the path of right faith, right knowledge, and right conduct.

अंतिम संदेश – The Ultimate Message

हिंदी में:

शत्रुंजय पर्वत पर चढ़ना केवल हजारों सीढ़ियां चढ़ना नहीं है। यह अपने भीतर छिपे अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह और द्वेष को पीछे छोड़ने की आध्यात्मिक यात्रा है।

भगवान आदिनाथ के दर्शन करना केवल उनकी प्रतिमा के सामने सिर झुकाना नहीं है, बल्कि उनके वीतरागी गुणों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लेना है।

इस भजन का सबसे सुंदर संदेश यही है कि जिस प्रकार भक्त शत्रुंजय पर्वत की प्रत्येक सीढ़ी श्रद्धा से चढ़ता है, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन की प्रत्येक सीढ़ी सत्य, अहिंसा, क्षमा, संयम और करुणा के साथ चढ़नी चाहिए।

English:

Climbing Shatrunjaya Hill is not simply about ascending thousands of physical steps. It symbolizes the spiritual effort to overcome ego, anger, greed, attachment, and hatred.

Receiving the darshan of Lord Adinath is not merely about bowing before an idol. It is about embracing the enlightened qualities of the Lord and applying them to everyday life.

The most beautiful message of this hymn is that just as a devotee climbs every step of Shatrunjaya with faith, we should also climb every step of our lives with truth, non-violence, forgiveness, self-discipline, and compassion.

जय आदिनाथ दादा !

श्री शत्रुंजय तीर्थ की पावन यात्रा सभी जीवों के लिए आत्मकल्याण और मोक्षमार्ग की प्रेरणा बने।

Read the original article at:
https://www.lyricsofgana.com/uncha-uncha-shatrunjayna-shikharo-sohay-lyrics-jain-stavan

SOCIAL MEDIA

Instagram | Facebook | YouTube